लखनऊ नामा

डॉ. योगेश प्रवीन

अलीगंज महाबीर मन्दिर

लखनऊ में गोमती के उस पार अयोध्या मार्ग से माण्डव्य ऋषि के आश्रम मड़ियांव के बीच का क्षेत्र किसी जमाने में शीशम, नीम, पीपल, आम और पाकर के वृक्षों से भरा हुआ था। बीच-बीच में जो तालाब थे वो कमलवन से आच्छादित थे। पिछले दौर में इस भूभाग पर बसायी गयी बस्तियाँ चाँदगंज और माह नगर में ऐसे कई कच्चे पक्के तालाब मिले हैं। इसी इलाके के मध्य में अलीगंज आबाद हुआ जिसे नवाब आसफुद्दौला की माँ बहू बेगम साहिबा द्वारा बसाया गया मानते हैं। हजरत अली के नाम पर आबाद अलीगंज में बजरंग बली का प्रतिष्ठित होना शक्ति एवं शौर्य का समागम ही कहा जाना चाहिए।

यहाँ राम भक्त हुनमान के दो प्राचीन मन्दिर हैं। जिस मन्दिर को आजकल मुख्य मन्दिर का महत्त्व दिया जाता है वो सुगन्धित द्रव विक्रेता लाला जाटमल द्वारा सन् 1783 में बनवाया गया। इस मन्दिर का श्री विग्रह स्वयम्भू है और ये मूर्ति महन्त खासा राम को एक स्वप्न निर्देश से जमीन से प्राप्त हुई थी। इस मन्दिर के निकट की पुष्करणी उस समय भी मौजूद थी, जो यहाँ किसी प्राचीन पूजास्थल होने का संकेत देती है। महन्त खासा राम के अनुरोध पर ही इस मन्दिर का निर्माण किया गया। मन्दिर का मुख्य मण्डप 6 मई सन् 1783 को बनकर तैयार हुआ था। लाला जाटमल को भी महावीर जी की दिव्य प्रेरणा प्राप्त हुई और प्रसाद मिला। कहते हैं कि यहाँ किसी साधु को हनुमान जी ने साक्षात् दर्शन दिये और तब से ही इस स्थान की गणना सिद्ध क्षेत्रों में होने लगी। इस मन्दिर के पहले पुजारी सदानन्द जी हुए हैं। धीरे-धीरे मन्दिर की प्रतिष्ठा बढ़ती गयी और लोग इस देवालय पर धन धरती को भेंट देते रहे। पहले इस मन्दिर के चारों ओर एक शानदार बाग था। मन्दिर आज भी काफी विस्तृत घेरे में कई फाटकों से घिरा हुआ है जिसके साथ पुरानी दुकानें बनी हुई हैं। चन्द्रमास जेठ के पहले मंगल का मेला जो कि लखनऊ में बड़े मंगल का मेला कहा जाता है, इसी मन्दिर की प्रधान परम्परा है। जेठ के पहले मंगल को ही यहाँ हनुमान जी के प्रकट होने की बात बतायी जाती है। जेठ महीने के सभी मंगलों में यहाँ बड़ी भीड़ होती है। बड़े मंगल के अवसर पर नवाब वाजिद अली शाह एक ब्रह्मभोज का आयोजन करते थे और बेगमों की तरफ से बन्दरों को चना खिलाया जाता था। अवध के नवाबों में हनुमान जी के

प्रति बड़ी आस्था रही है और नवाबी काल में बन्दर की हत्या पर पूर्णतया प्रतिबन्ध रहा है। एक दो बार अगर सनक दिमागी में किसी ने बन्दरों पर बन्दूक चलायी भी है, तो उसको उसका भुगतान जल्दी ही भुगतना पड़ा। इसके बड़े रोचक और ऐतिहासिक विवरण मिलते हैं।

नवाबी घराने की ओर से हनुमान जी की पूजा प्रतिष्ठा को जो सरंक्षण मिला और बेगमों की उन पर जो आस्था थी उसका प्रबल प्रतीक अलीगंज में स्थित, हनुमान जी का दूसरा प्रधान मन्दिर है जिसे नवाब सहादत अली खाँ की माँ जनाब आलिया ने बनवाया था। अवध सल्तनत के कौमी निशान के तौर पर इस मन्दिर के शिखर पर दूज का चाँद आज भी बना हुआ देखा जा सकता है। जनाब आलिया, रैकबार ठाकुर घराने की बेटी थीं और छत्रकुवर उनका नाम था उन्होंने ही अपने बेटे सआदत अली खाँ का नाम बचपन में मंगलू रखा था इसलिए हनुमान मन्दिर की निर्माण कथा पूरी तरह स्पष्ट होती है। जनाब आलिया का मकबरा लखनऊ के गोलागंज मुहल्ले में आज भी मौजूद है।

बड़े मंगल पर्व पर अलीगंज के मन्दिरों की परिक्रमा करने के लिए दूर-दूर से लोग लखनऊ आते हैं। सफल मनोरथ के लिए तमाम अभिलाषी तो लेट कर डगर नापते हुए अपने घर से यहाँ तक आते हैं। ये लड़के जो केवल लाल कौपीन पहनकर और गले में बेले की फूलमाला डाल के जलाके की गर्मी में दूर-दूर से जमीन में लोटते हुए आते हैं प्रायः कम उम्र के ब्रह्मचारी बालक होते हैं, जिनके साथ उनकी माताएँ हाथ में बाँस खजूर के पंखे और पानी की झझड़ी लेकर चलती हैं। धीरे-धीरे बड़े मंगल की प्रतिष्ठा लखनऊ नगर तथा जनपद के दूसरे हनुमान मन्दिरों में भी व्याप्त होती चली गयी, जब कि ये पर्व केवल अलीगंज के महाबीर मन्दिर से ही सीधा सम्बन्ध रखता है।